साईं साईं कहना भक्तो

भरो, हाज़री भरो, साईं की हाज़री* ॥,
ज़रा, दोनों हाथ उठाओ ॥,
साईं के दीवानों को, डर के नहीं रहना ॥,
साईं साईं कहना भक्तो, साईं साईं कहना ॥

^खड़े दर पे सवाली, सुनो दुखियों के बाली ।
तेरी है शान निराली, ना लौटा कोई ख़ाली ।
सदा रखी, लाज सब की, किसी से क्या कहना ॥,
साईं साईं कहना भक्तो, साईं साईं कहना ॥
साईं के दीवानों को, डर के,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,

^चाँद पाटिल ने माना, महल शब्दी पहचाना ।
श्याम था इनका दीवाना, बाईज़ा ने बेटा माना ।
साईं जी के, दर्शन को, सब के तरसे नयना ॥,
साईं साईं कहना भक्तो, साईं साईं कहना ॥
साईं के दीवानों को, डर के,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,

^सभी को गले लगाया, भेद आपस का मिटाया ।
संत होया कोई ज्ञानी, सभी ने बात मानी ।
हिन्दू मुस्लिम, सिख ईसाई, मिलजुल के रहना ॥,
साईं साईं कहना भक्तो, साईं साईं कहना ॥
साईं के दीवानों को, डर के,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,

अपलोडर- अनिलरामूर्तिभोपाल

https://bhajanganga.com/bhajan/lyrics/id/29386/title/sai-sai-kehna-bhakto

अपने Android मोबाइल पर BhajanGanga App डाउनलोड करें और भजनों का आनंद ले |